रविवार 1 सितंबर, 2019

विषय — ईसा मसीह

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 22 : 16

"मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे: मैं दाऊद का मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं॥"

उत्तरदायी अध्ययन: इफिसियों 2 : 4-10

4 परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।
5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)
6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।
7 कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।
8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।
9 और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।
10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. यशायाह 11 : 1-4

1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।
2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।
3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा॥ वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा;
4 परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा।

2. यूहन्ना 10 : 23 (यीशु)-33, 36-39

23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।
26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और पिता एक हैं।
31 यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।
32 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?
33 यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।

36 तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है, इसलिये कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।
37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो।
38 परन्तु यदि मैं करता हूं, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं।
39 तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया॥

3. यूहन्ना 8 : 31 (यीशु को), 37 (*से*;), 40, 44, 56-59

31 तब यीशु ने कहा
37 मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो;
40 परन्तु अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने नहीं किया था।
44 तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है।
56 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया।
57 यहूदियों ने उस से कहा, अब तक तू पचास वर्ष का नहीं; फिर भी तू ने इब्राहीम को देखा है?
58 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं।
59 तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया॥

4. लूका 14 : 25-33

25 और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा।
26 यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।
28 तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं?
29 कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें।
30 कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?

31 या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर उसका साम्हना कर सकता हूं, कि नहीं?
32 नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।
33 इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

5. लूका 4 : 33-36

33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी।
34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल गई।
36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।

6. इब्रानियों 4 : 12

12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583 : 10-11

मसीह। भगवान की दिव्य अभिव्यक्ति, जो अवतार त्रुटि को नष्ट करने के लिए मांस के लिए आती है।

2. 333 : 16 (यह)-31

नासरत के यीशु के आगमन ने ईसाई युग की पहली शताब्दी को चिह्नित किया, लेकिन मसीह वर्षों या दिनों की शुरुआत के बिना है। ईसाई युग से पहले और बाद में सभी पीढ़ियों के दौरान, आध्यात्मिक विचार के रूप में, मसीह, - भगवान का प्रतिबिंब, - शक्ति और अनुग्रह के कुछ उपाय के साथ आया है जो सभी मसीह, सत्य को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं। अब्राहम, जैकब, मूसा और नबियों ने मसीहा या मसीह की शानदार झलकें पकड़ीं, जिसने दिव्य प्रकृति, प्रेम के सार में इन द्रष्टाओं को बपतिस्मा दिया। ईश्वरीय छवि, विचार, या मसीह ईश्वरीय सिद्धांत ईश्वर से अविभाज्य था, है और हमेशा के लिए रहेगा। यीशु ने अपनी आध्यात्मिक पहचान की इस एकता का उल्लेख किया: "पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं।" "मैं और पिता एक हैं।" "पिता मुझ से बड़ा है।" एक आत्मा में सभी पहचान शामिल हैं।

3. 334 : 10 (यह)-20

अदृश्य मसीह तथाकथित व्यक्तिगत इंद्रियों के लिए अगोचर था, जबकि यीशु एक शारीरिक अस्तित्व के रूप में दिखाई दिया। अनदेखी और देखा, आध्यात्मिक और भौतिक, शाश्वत मसीह और शारीरिक यीशु का मांस में प्रकट होने का यह दोहरा व्यक्तित्व, मास्टर के स्वर्गारोहण होने तक जारी रहा, जब मानव, भौतिक अवधारणा, या यीशु गायब हो गया, जबकि आध्यात्मिक आत्म, या मसीह, दैवीय विज्ञान के अनन्त क्रम में मौजूद है, दुनिया के पापों को दूर कर रहा है, जैसा कि मसीह ने हमेशा किया है, इससे पहले भी मानव यीशु नश्वर आंखों के लिए अवतार था।

4. 315 : 29-11

एक मानव रूप में पहने हुए (अर्थात्, जैसा कि यह नश्वर दृश्य लगता था), एक मानव मां द्वारा कल्पना की जा रही थी, यीशु सत्य और त्रुटि के बीच आत्मा और मांस के बीच मध्यस्थ थे। ईश्वरीय विज्ञान के तरीके को समझाते और प्रदर्शित करते हुए, वह उन सभी के लिए मुक्ति का मार्ग बन गया, जिन्होंने उनके वचन को स्वीकार किया। उससे नश्वर जान सकते हैं कि बुराई से कैसे बचा जाए। विज्ञान को उसके निर्माता से जोड़ा जा रहा असली आदमी, नश्वर को केवल पाप से मोड़ने की जरूरत है और मसीह, वास्तविक व्यक्ति और भगवान के साथ उसके संबंध को खोजने के लिए और दिव्य पुत्रत्व को पहचानने के लिए नश्वर स्वार्थ की दृष्टि खोना चाहिए। मसीह, सत्य, को यीशु के माध्यम से शरीर पर आत्मा की शक्ति को साबित करने के लिए प्रदर्शित किया गया था, - यह दिखाने के लिए कि सत्य को मानव मन और शरीर पर इसके प्रभाव, बीमारी को ठीक करने और पाप को नष्ट करने के द्वारा प्रकट किया जाता है।

5. 6 : 23-6

यीशु ने उसे बाहर निकालने से पहले पाप का खुलासा किया और उसे फटकार लगाई। एक बीमार महिला के बारे में उन्होंने कहा कि शैतान ने उसे बाध्य किया था, और पीटर को उसने कहा, "तू मेरे लिये ठोकर का कारण है।" वह आदमियों को सिखा रहा था और दिखा रहा था कि पाप, बीमारी और मौत को कैसे नष्ट किया जाए। उन्होंने फल रहित वृक्ष के बारे में कहा, "[यह] कट गया है।"

यह कई लोगों द्वारा माना जाता है कि एक निश्चित मजिस्ट्रेट, जो यीशु के समय में रहते थे, ने यह कथन दिया:
"उसकी फटकार भयभीत है।" हमारे मास्टर की कड़वी भाषा इस विवरण की पुष्टि करती है।

गलती के लिए उसे जो एकमात्र सजा थी, वह थी, "हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो।" जीसस का तिरस्कार तेज और गहन था, इसका मजबूत प्रमाण उनके स्वयं के शब्दों में मिलता है, — इस तरह के जबरन बोलने की आवश्यकता को दिखाते हुए, जब उसने शैतानों को बाहर निकाला और बीमार और पापी को चंगा किया।

6. 230 : 1-10

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है। क्या आप सत्य की गुणवत्ता या स्थिति को नष्ट करने के लिए दवाओं के साथ या बिना प्रयास करेंगे? लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को भर देता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर के माध्यम से आता है, दिव्य सिद्धांत, प्रेम, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

7. 41 : 28-32

यीशु ने जो सच्चाई सिखाई, प्राचीनों ने उसका मजाक उड़ाया। क्यूं कर? क्योंकि यह उन लोगों से अधिक की मांग करता था जो वे अभ्यास करने के लिए तैयार थे। उनके लिए राष्ट्रीय देवता में विश्वास करना पर्याप्त था; लेकिन उस विश्वास ने, हमारे समय से, कभी भी ऐसा शिष्य नहीं बनाया जो बुराइयों को मिटा सके और बीमारों को ठीक कर सके।

8. 141 : 4-9

केवल कुछ लोग ही यीशु के दिव्य जीवन यापन के लिए उपदेशों को समझते हैं या उनका पालन करते हैं। क्यूं कर? क्योंकि उनके उपदेशों के लिए शिष्य को दाहिने हाथ को काटकर दाहिनी आंख को बाहर निकालना पड़ता है, — इसका मतलब है, मसीह के लिए सबकुछ छोड़ने के लिए, यहां तक कि सबसे पोषित मान्यताओं और प्रथाओं को अलग करना।

9. 26 : 1-11 (*से*;), 16-18

जब हम यीशु को मानते हैं, और जो कुछ उन्होंने नश्वर के लिए किया, उसके लिए हृदय से आभार प्रकट करता है, — अपने प्यार के रास्ते को केवल महिमा के सिंहासन तक फैलाकर हमारे लिए रास्ता तलाश करने वाली व्यर्थ पीड़ा में, — फिर भी यीशु ने हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं दिया, अगर हम उसकी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करें; और सभी ने अपने प्रेम के प्रदर्शन के अनुपात में पीने के लिए दु:खद प्रयास किए, जब तक सभी दिव्य प्रेम के माध्यम से मुक्त नहीं हो जाते।

मसीह आत्मा था जिसे यीशु ने अपने स्वयं के ऐसे बयानों में निहित किया था: "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;" … उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

10. 55 : 15-26

अपने स्वयं के पंखों के नीचे बीमार और पापी लोगों को इकट्ठा करके, सत्य का अमर विचार सदियों से चल रहा है। मेरी थकी हुई आशा उस सुखद दिन को महसूस करने की कोशिश करती है, जब मनुष्य मसीह के विज्ञान को पहचान लेगा और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा, — जब वह ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उस परमात्मा की उपचार शक्ति का एहसास करेगा जो उसने किया है और मानव जाति के लिए कर रहा है। वादे पूरे होंगे। दिव्य चिकित्सा के प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, अब मसीह के प्याले को पीता है, और वह ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6